कला : विद्यार्थियों को स्कूल से फिर से जोड़ने के लिए

रुचि कोटनाला

कई महीनों से चली आ रहीं परेशानियों और ठहराव के बाद आख़िरकार अब हमारा जीवन सामान्य हो रहा है। रोज़मर्रा की गतिविधियों को पुनः शुरू करने की प्रक्रिया में, सरकार अब स्कूलों को फिर से खोलने की पूरी तैयारी कर चुकी है। हालाँकि, स्कूल प्रशासन, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए यह काफ़ी चुनौतीपूर्ण होने वाला है। ख़ासतौर पर विद्यार्थियों के लिए, इतने लम्बे अन्तराल के बाद स्कूल में आश्वस्त और सहज महसूस करना काफ़ी ज़्यादा मुश्किल होगा। इसलिए यह काफ़ी महत्त्वपूर्ण हो गया है कि कुछ ऐसी रणनीतियाँ बनाई जाएँ जो विद्यार्थियों को स्कूल में पूरे आत्मविश्वास और रुचि के साथ फिर से ढलने में मदद करें।

मेरा मानना है कि कला, विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ फिर से जोड़ने का प्रभावी साधन बन सकती है। एक कला शिक्षक होने के नाते मैंने एक कार्य योजना बनाई है। मेरी रणनीतियों के केन्द्र में होंगे : कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल, समूह-आधारित गतिविधियाँ और विषय का समावेश।

कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल

लॉकडाउन के दौरान, अधिकांश विद्यार्थी सामान्य कला सामग्री जैसे काग़ज़, रंग आदि प्राप्त करने में असमर्थ थे। इसलिए, मैंने उन्हें कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जो उनके घरों में और आसपास आसानी से उपलब्ध थीं। इन महीनों के दौरान विद्यार्थियों ने इस सामग्री से कई कलाकृतियाँ बनाईं। इसे स्कूल में भी जारी रखकर वे कक्षाओं में सहज हो सकेंगे।

कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों का इस्तेमाल करने के कई फ़ायदे हैं। कभी-कभी विद्यार्थी, ख़ासतौर पर वे जो स्केचिंग में कुशल नहीं होते, काग़ज़, स्केच पेन, वॉटरकलर जैसी सामान्य सामग्री के साथ चित्रकला करते हुए ऊब जाते हैं, लेकिन उन्हें अपनी ऊब को व्यक्त करना मुश्किल लगता है। ऐसी स्थितियों में, कबाड़ और प्राकृतिक सामग्री का इस्तेमाल, सीखने की प्रक्रिया में आनन्द भरकर उनकी रुचि को फिर से विकसित करने और उनके संवेदी कौशलों को बढ़ाने में बहुत उपयोगी हो सकता है। चूँकि कबाड़ के इस्तेमाल के लिए कोई तयशुदा तकनीक नहीं है, इसलिए उनसे कोई कलाकृति बनाने के लिए काफ़ी रचनात्मकता, नवाचार और खोजबीन की ज़रूरत होती है। भले ही स्कूलों द्वारा विद्यार्थियों को स्कूल में कला की सारी सम्भव सामग्री मुहैया कराई जाती है, लेकिन घर में ज़्यादातर माता-पिता अपने बच्चों के लिए नियमित रूप से ऐसे संसाधन नहीं ख़रीद पाते। इस वजह से कई विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल नहीं कर पाते।

लेकिन, कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ें उनके घरों और परिवेश में आसानी से और काफ़ी मात्रा में उपलब्ध होती हैं। इसलिए, उनका इस्तेमाल करके विद्यार्थी ज़्यादा ख़र्च किए बिना, अपनी कलात्मक यात्रा को आराम से जारी रख सकते हैं। इसके अलावा, कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों के साथ काम करने से उन्हें पुनर्चक्रण का महत्त्व समझ आता है और उनके बाल मन में प्रकृति के प्रति सम्मान भी पैदा होता है।

कुछ सुझाव

विद्यार्थी आमतौर पर कला की कक्षा में काग़ज़ पर लैंडस्केप और चित्र बनाते हैं। इसी तरह की गतिविधि कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों के साथ भी की जा सकती है। विद्यार्थियों को अपने परिवेश की छानबीन करने और कई तरह के पत्थर, डण्डियाँ, पत्तियाँ, कार्डबोर्ड, अख़बार, सुतली आदि इकट्ठा करने के लिए कहें। विद्यार्थी या तो इन्हें कार्डबोर्ड पर चिपकाकर कोई लैंडस्केप बना सकते हैं या चाहें तो कोई मॉडल बना सकते हैं।

कहानी सुनाने की गतिविधियों के लिए, विद्यार्थी पुराने मोज़े, कपड़े, अख़बार और डण्डियों आदि की मदद से कठपुतलियाँ और मुखौटे बना सकते हैं।

समूह गतिविधियाँ

बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास के लिए उनका समूहों में काम करना ज़रूरी है। कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो समूह में काम करते हुए बेहतर प्रदर्शन करते हैं। लेकिन लॉकडाउन के दौरान विद्यार्थियों ने व्यक्तिगत रूप से काम किया, जिससे न केवल उनकी सीखने की क्षमता प्रभावित हुई, बल्कि कई मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी पैदा हुईं। मैंने ऐसी स्थितियाँ भी देखीं कि बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं से बचने की कोशिश कर रहे हैं, अपने काम में दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं या अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में झिझक रहे हैं। विद्यार्थियों के स्कूल लौटने पर इन मुद्दों को हल करना

बहुत ज़रूरी है। इसके लिए मेरी योजना कुछ समूह आधारित गतिविधियाँ करने की है, जिससे बच्चों को आपस में खुलकर बातचीत करने, अपने सहपाठियों के साथ पुनः रिश्ते बनाने और आत्मविश्वास हासिल करने का मौक़ा मिलेगा। इसके अलावा, यह उनके लिए सीखने की प्रक्रिया को और ज़्यादा मनोरंजक बना देगा।

कुछ सुझाव

विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों की मदद से स्कूल के बग़ीचे को सजाएँ। इसके लिए शिक्षक विद्यार्थियों को अलग-अलग टीमों में बाँट सकते हैं और हर टीम को एक ख़ास जगह देकर उसे किसी ख़ास थीम पर सजाने के लिए कह सकते हैं, जैसे कि पक्षी, कीड़े, फूल आदि। योजना बनाने और चीज़ें इकट्ठी करने, सजावट करने, दस्तावेज़ीकरण और प्रस्तुति में टीम के सभी सदस्यों को शामिल होना चाहिए। काम पूरा करने के बाद, हरेक टीम को न केवल अपने साथियों का बल्कि अन्य टीमों के सदस्यों का भी समकक्ष मूल्यांकन करना होगा। इसी तरह, हम कहानी सुनाने के सत्रों के लिए भी समूह-आधारित गतिविधियों का आयोजन कर सकते हैं। यहाँ हर टीम स्टोरीबुक, मॉडल और कठपुतलियाँ आदि बनाकर अपनी कहानी को रच सकती है और प्रस्तुत कर सकती है।

अन्य विषयों के साथ कला का समावेश

हम सभी जानते हैं कि स्कूल का वातावरण सीखने की प्रक्रिया में बहुत अहम भूमिका निभाता है और स्कूल अपने विद्यार्थियों के लिए एक उपयुक्त वातावरण बनाने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, कई महीनों से बच्चे अपने घरों तक ही सीमित हैं और अब उनके लिए फिर से स्कूल के माहौल में ढलना मुश्किल होने वाला है। इससे न केवल उनकी पढ़ाई में दिलचस्पी घट सकती है बल्कि सीखने की प्रक्रिया भी प्रभावित हो सकती है। तो सीखने को रोचक और मनोरंजक बनाना बहुत ज़रूरी है। ऐसा करने के लिए कला को सामाजिक विज्ञान, गणित, भाषा आदि जैसे विषयों के साथ जोड़ना एक प्रभावी रणनीति होगी।

कुछ सुझाव

उदाहरण के लिए, गणित में ‘बड़ा और छोटा’ की अवधारणा सिखाने के लिए विद्यार्थियों को हाथी, शेर, कुत्ते और चूहे जैसे जानवरों के चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। इसी तरह विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी और उनकी मातृभाषा, दोनों में









एपीएस मातली के विद्यार्थियों द्वारा बेकार सामग्री से बनाई गई कलाकृतियाँ और रचनाएँ

कविताओं और कहानियों के लिए स्टोरीबोर्ड और मॉडल बनाने के लिए कहा जा सकता है। सामाजिक विज्ञान में भी प्रागैतिहासिक युग के बारे में समझाने के लिए विद्यार्थियों को लकड़ी और पत्थरों से हथियार और उपकरण बनाने के लिए कहा जा सकता है। हम उन्हें फूलों, सब्ज़ियों, फलों, चूना पत्थर आदि से बनाए गए प्राकृतिक रंगों की मदद से पत्थरों को रंगने के लिए भी कह सकते हैं। इसके अलावा विद्यार्थी पेड़ की छाल, कपड़े या मिट्टी पर चित्रलिपि लिख सकते हैं या चित्र बना सकते हैं।

नमूना पाठ योजना : कक्षा 1

विषय : दृश्य कला (हिन्दी के साथ समावेश)

टॉपिक : अध्याय 4 : पत्ते ही पत्ते

उद्देश्य :

1. सीखने की प्रक्रिया को मनोरंजक और दिलचस्प बनाना
2. विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता, नवाचार और कल्पना को खुलकर प्रदर्शित करने का मौक़ा देना
3. विद्यार्थियों को कबाड़ और प्राकृतिक चीज़ों से कलात्मक चीज़ें बनाने के लिए प्रोत्साहित करना
4. टीम वर्क, अन्वेषण, योजना बनाना, विचारों का आदान-प्रदान और प्रस्तुतीकरण जैसे गुणों का विकास करना

साधन :

1. एनसीईआरटी कक्षा 1 हिन्दी पाठ्यपुस्तक (रिमझिम)
2. इंटरनेट से नमूना चित्र/ तस्वीरें
3. यूट्यूब से नमूना वीडियो

शिक्षण योजना :

1. गतिविधि शुरू करने से पहले, शिक्षक विद्यार्थियों को अपने आसपास से अलग-अलग तरह की पत्तियों को इकट्ठा करने के लिए कहेंगे। विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे नीचे गिरी हुई पत्तियों को ही इकट्ठा करें, उन्हें पौधों से न तोड़ें।
2. इसके बाद, शिक्षक विद्यार्थियों से कहेंगे कि वे स्वयं के द्वारा और अन्य विद्यार्थियों द्वारा इकट्ठी की गईं पत्तियों का बारीक़ी से निरीक्षण करें। इसके बाद, पत्तियों के आकार, आकृति, रंग और बनावट के आधार पर उनके बीच के अन्तरों पर कक्षा में चर्चा की जाएगी।
3. शिक्षक कुछ प्रश्न भी पूछेंगे, जैसे पौधों के लिए पत्तियों का क्या महत्त्व है? नीचे गिरी हुई पत्तियों और पौधे पर लगी हुई पत्तियों में क्या फ़र्क़ है? अलग-अलग पौधों में अलग-अलग तरह की पत्तियाँ क्यों होती हैं?
4. इसके बाद शिक्षक पत्तियों से बनी कलाकृतियों के कुछ वीडियो और फ़ोटो दिखाएँगे।
5. फिर, शिक्षक विद्यार्थियों को अलग-अलग समूहों में बाँटेंगे और प्रत्येक समूह को पत्तियों और फूलों से एक बन्दनवार (दरवाज़े पर लटकने वाली सजावट) बनाने के लिए कहेंगे। विद्यार्थी अपने घर और कक्षाओं को सजाने के लिए काग़ज़ या कपड़े के फूल और पैटर्न बना सकते हैं।
6. अगली गतिविधि होगी, 'लीफ़ प्रिंटिंग'। इसमें समूह का हर सदस्य एक अलग प्रकार की पत्ती लाकर एक ख़ास रंग का चयन करेगा, फिर पूरा समूह साथ मिलकर एक बड़े आकार के काग़ज़ पर पत्तियों के निशान बनाएगा। रंगों और पत्तियों के आकार का संयोजन कई दिलचस्प पैटर्न तैयार करेगा।
7. इसके बाद विद्यार्थी 'पत्तियों के प्राणी/ आकृतियाँ' गतिविधि करेंगे। इसमें विद्यार्थियों को पत्तियों का उपयोग करके कुछ प्राणी या आकृतियाँ (बिल्ली, मछली, कुत्ता, पक्षी, इन्सान, घर, नाव आदि) बनानी होंगी।
8. अन्त में, शिक्षक अध्याय 4 : 'पत्ते-ही-पत्ते' को ज़ोर से पढ़ेंगे। शिक्षक विद्यार्थियों को कठिन और नए शब्दों को समझने और उनका उच्चारण करने में भी मदद करेंगे।
9. इन गतिविधियों के दौरान, शिक्षक विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ध्यान से देखेंगे और उनका दस्तावेज़ीकरण करेंगे।

मूल्यांकन :

बिन्दु 1-4 : 1-3 के पैमाने पर मूल्यांकन करें

बिन्दु 5-8 एक पंक्ति में उत्तर दें

1. कला में सहकारी भागीदारी दिखाता है और अपने साथियों की सराहना करता है।
2. रंगों, आकृतियों, बनावटों, ध्वनियों और पैटर्नों को वर्गीकृत करता/ पहचानता है।

3. कलाकृतियों को बनाने और अभिनय करने के लिए विभिन्न सामग्रियों को ढूँढ़ने में आनन्द लेता है।
4. उन चीज़ों के बारे में बात करता है जो उसे सुन्दर लगती हैं या नहीं लगती हैं; प्रकृति की सुन्दरता को पसन्द करता है।
5. आपने इस गतिविधि में क्या अच्छा किया?
6. इसे आगे और बेहतर करने के लिए आप क्या सुधार करेंगे?
7. वे बच्चे जो इस गतिविधि में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।
8. वे बच्चे जिन्हें ज़्यादा मार्गदर्शन की ज़रूरत है।

Endnotes

i https://www.youtube.com/watch?v=eBEPR7wziDM
https://www.youtube.com/watch?v=7kIYABvcvCo
https://www.youtube.com/watch?v=h8mkkC9fs1k



रूचि कोटनाला उत्तरकाशी के मातली स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कला और शिल्प विषय पढ़ाती हैं। वे एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड से ड्राइंग और पेंटिंग में स्नातकोत्तर हैं। कला और शिल्प के अलावा उन्हें यात्राएँ करने, नृत्य और संगीत में भी रुचि है। जीवन के लिए उनका दर्शन है — छोटी चीज़ों का आनन्द लें, भौतिकवादी बोझ को कम रखें और जो कुछ भी आपके पास है उसके लिए आभारी रहें। उनसे ruchi.kotnala@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अमेय कान्त